ISSN (P) : 0976-7444
(e) : 2395-7247

हरियाणा के बौद्ध वास्तुकला का धार्मिक व कलात्मक पक्ष

16

अवनीत कौर*

हरियाणा राज्य में बौद्ध–स्तूपो तथा बुद्ध से संबधित कुछ मूर्तियां प्राप्त होने का अभिप्राय यह है कि यहॉ बौद्ध– धर्म का पालन रहा होगा। जैसा की इस प्रदेश में कुछ खंड़ित स्तूप देखने को मिलते है। इनके आधार पर यह बात सामने आई है कि इन स्तूपो तथा इनसे संबधित मूर्तियों का अपना एक सास्कंषतिक तथा कलात्मक महत्व है। इन्हीं तथ्यों को आधार बना कर कलात्मक तथा सास्ंकषतिक विवेचन किया है। जो साधारण होते हुये भी अपना अलग ही महत्व रखते है तथा शौध–पत्र के जरिये कुछ कलात्मक तत्वों और सिद्धान्तों को प्रकाश में लाया गया है।

भारत की प्राचीन सभ्यता की जन्मस्थली हरियाणा को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यही वह प्रदेश है जहॉ हमारी प्राचीन सभ्यता जन्मी ,फली–फूली व समष्द्ध हुई। बडे– बडे ऋर्षि मुनियों व विद्धानो ने इस भूमि पर चरण रखे व वेदों की रचना भी की। इस प्रदेश के पश्चिम में पंजाब और उत्तर में शिवालिक की पहाडियॉ तथा हिमाचल प्रदेश है। इसके दक्षिण में अरावली की पहाड़ियॉ और राजस्थान का मरू प्रदेश है। हरियाणा राज्य राजनैतिक एवं प्रशासनिक इकाई के रूप में एक नम्बर 1966 को अस्तित्व में आया । यद्यपि इस क्षेत्र में साहित्य, स्तूपों व शिलालेखों के आधार पर बौद्ध धर्म का विशेष योगदान रहा है। कुरूक्षेत्र, आदि बद्री, चन्हेटी, अग्रोहा, रोहतक, असंध का इतिहास में अहम योगदान रहा है।

जिस समय गंगा के पठारों में बुद्ध का मानवीय धर्म फैल रहा था उस समय ही हरियाणा के लोगों में नैतिकता का प्रचलन था। हरियाणा के दयालु बुद्धीमान एवं नैतिक सम्पन्न लोगो की भूमि पर बुद्ध के धर्म के बीच तेज गति से उगे तथा देष के अन्य भागों की तरह हरियाण में भी बुद्धित्म अशोक, कनिश्क एवं हर्ष के काल में खूब फला–फूला।

शुंग, इंडो–ग्रीक व शक राजाओं के काल में बौद्ध धर्म हरियाणा का महत्वपूर्ण धर्म रहा। रोहतक, अग्रेहा, सुघ और थानेसर प्राचीन काल में बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण केन्द्र रहे है।

भौगोलिक दर्षष्टि से हरियाणा मथूरा और गंधार के बीच स्थित है। गंधार व पाटलिपुत्र को जोड़ने वाला व्यापारी मार्ग हरियाणा से ही गुजरता है। उपरोक्त बातों ने स्पष्ट कर दिया है कि हरियाणा में न केवल मथुरा व गंधार शैली के अवशेष मिलें हैं अपितु दोनों शैलियों के मिले–जुले प्रभाव वाले अवशेष भी मिले हैं। इस प्रकार यह क्षेत्र बौद्ध धर्म के प्रभाव का दोनो तरफ से गढ़ रहा है।

भारत वर्ष में प्रागैतिहासिक काल से कला का विषेश महत्व रहा है। कला को हर क्षेत्र

*पी0एच0डी0 शोधछात्रा (विजुअल आर्ट्स विभाग), महर्षि दयानद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा)

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

में काफी सुन्दर एवं उचित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जिनमें वास्तुकला, चित्रकला, नाट्यकला और संगीतकला भी है। वास्तुकला एवं अलंकार के रूप में बौद्ध स्तूप भी अहम भूमिका रखते है।

स्तूप (अभिप्राय व संरचना)

स्तूप भगवान के तथा उनके निर्वाण का धोतक है। स्तूप बनाने की प्रथा बुद्ध से भी पहले की मानी जाती है। किसी राजा अथवा विशेष व्यक्ति के मर्णोपरान्त उनकी अस्थियों के साथ उनके जीवन की आवश्यक वस्तुओं को भी रखा जाता था। चिता के स्थान पर बनाए गए मिट्टी के ढेर थूह को स्तूप कहते थे। थूह के उपर लकडी का खम्भा चैत्ययूप भी खडा किया जाता था । स्तूप को चैत्य भी कहते थे। ये स्तूप पहले ईंटों से तथा कुछ समय पश्चात् पत्थरों की शीलाओं से बनाए जाने लगे।

स्तूप के तीन भाग होते है–एक गोल आधार (प्रदक्षण पथ) ,अण्डाकार (मुख्य भाग) तथा छतरी।

चित्र–

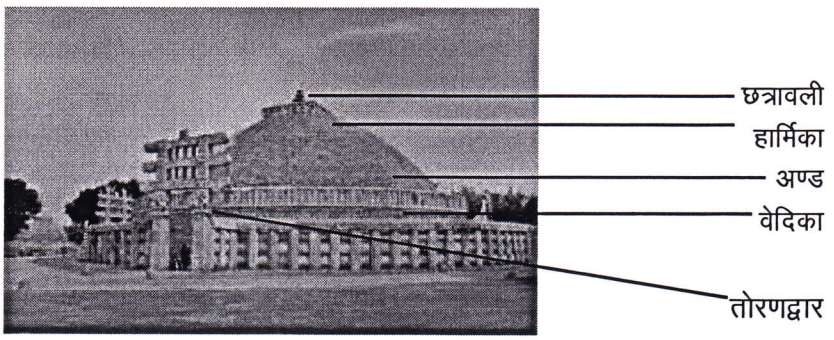

स्तूप का निर्माण कुटिम या शिलाओं की नींव पर किया जाता था। चबूतरे के उपर बिछाए हुए शिलापट्टों पर आधे कटोरे की आकृति का या लम्बोतरे गुम्बंद की आकृति का एक थूह बनाया जाता था। जिसे अंड कहते थे। इसका संकेत इसी शब्द में निहित है। आरम्भ में स्तूप के व्यास व उसकी उॅचाई का अनुपात अपेक्षाकृत कम होता था। परन्तु बाद में इसमें वृद्धि होती गई। जब अण्ड उचॉई बढती गई तब स्तूप के आकार की तुलना महाबुब्बल या पानी के बडे बुलबुल से की जाने लगी। स्तूप की चोटी अपनी गोलाई पूरी न करके सिरपर कुपुटी बनाई जाती थी। जिसे हार्मिका कहते थे। यह स्तूप का सबसे महत्वपूर्ण भाग है । हार्मिका का अर्थ है देवताओं का निवास स्थान। हार्मिका के बीच में एक यष्टि लगाई जाती थी । यष्टि का नीचला भाग स्तूप के मस्तक में धातुर्गभ मंजूषा के उपर पिरोया रहता था और उसके उपरी सिरे पर तीन छत्र या छत्रावली लगाई जाती थी। सबसे उपर का एक अलग छत्र लगता है। इस प्रतीक की महानता के कई कारण लगाये जाते हैं। इसे एक युग का खजाना भी समझा जा सकता है।

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

तीन छतरियों को ब्रह्मण्ड का प्रतीक समझा जाता है तथा बीच के खम्बे को ब्रह्मण्ड की धुरी का। कालान्तर में इन छत्रों की संख्या तीन से बढकर सात तक पहुँच गई थी। हार्मिका के चारों ओर छोटे खम्बों की वेदिका बनाई जाती थी। जिससे उस स्थान पर देव प्रभाव सूचित होता था। क्रमशः स्तूप के वास्तु विधान में विकास हुआ। बौद्ध स्तूपों में चारो ओर आरम्भ से ही काष्ठ वेष्टिनी या लकड़ी की वेदिकाएं बनाई जाने लगी। गुप्तकाल में आये चीनी यात्री हयूनसांग ने हरियाणा का भी भ्रमण किया तथा अपने लेख में हरियाणा के बौद्ध स्तूपों का भी वर्णन किया है।

हरियाणा राज्य में चन्हेटी (जगाधरी), आदी बद्री, अमादलपुर ;यमुनानगरद्ध, भादस, हथीन (पलवल), अंसध, कुरूक्षेत्र, सांघ, सुघांय, अहरवा से बौद्ध स्तूप टूटी हालत में मिले है तथा हरियाणा के अन्य कई क्षेत्रो अमीन (कुरूक्षेत्र), फतेहाबाद (मेवात), अग्रेहा (हिसार), झज्जर, अम्बाला, करनाल, रोहतक से बौद्ध मूर्तिया, स्तम्ब एवं अन्य अवशेष मिले है जो हरियाणा राज्य में उन्नत हुए बौद्ध धर्म का प्रमाण देते है।

चन्हेटीः–

चन्हेटी गॉव (जगाधरी) के दक्षिण –पूर्व में ईंटों का एक विशाल स्तूप है। अशोक द्वारा निर्मित बौद्ध स्तूप है जो कि हयूनसांग द्वारा बताये बये दस स्तूप मे से एक है यहॉ से कनिंघम को मौर्य कालीन सिक्के मिले थे।

यह स्तूप, बडिया जाने वाली सडक पर मौजूद है। इस स्तूप की उचॉई 28 मीटर तथा परिधि 180 मीटर है। इसमें लाल रंग की पकी हुई ईंटें इस्तेमाल की गई है। जिनकी पैमाईश 30x30x7 सै, मीटर है। जिला गजिटर में इसे थेह टीला लिखा था। यहॉ भी ईटों के एक रददे के उपर दूसरा रददा लगा है। जो कि उपर की तरफ कम होता जाता है। स्तूप बनाने का यही सरल उपाय था। बनते –बनते एक अर्धगोलाकार, उल्टे कटोरे की तरह बनाया जाता था। इस स्तूप में लगने वाली कोई वेदिका अभी तक नहीं मिली है। हो सकता है कि वेदिका लकडी की होगी, किसी ने इसको पत्थर से नहीं बनाया होगा।

स्थानीय लोग बनाते है कि अर्धशताब्दी पहले भी इसके चारों तरफ इस पर चढने के लिए सीढ़िया बनी थी। ये शायद इस स्तूप की सुन्दरता एवं सम्मानता को बढ़ाने के लिए बनाई गई हों। ईटें चुराने वालो ने ही इन सब को समाप्त कर दिया है और अब मात्र एक स्तूप ही बचा है जिसे पुरात्तव विभाग की देखरेख में रखा गया है और टूटे स्थान की मुरम्मत की जा

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

रही है।

आदि बद्रीः–

आदि बद्री में सरस्वती नदी के मैदान में बना बौद्ध स्तूप साबुत ईंटों तथा ईंटों के टुकडो से बना है । स्तूप की परिधि 11 मीटर है। इसके बीच में 3x3 मीटर की केन्द्रीय कोठरी है। इसमें लगी ईटों का नाप 30x2x5 से0मी0 है। 22 अरदों में बनी अन्दर की दीवार की मोटाई 1.5 मीटर है। मसाले की जगह मिट्टी की पतली सतह का इस्तेमाल किया गया है। बाईस आसारों के बाद गोल पत्थरों का स्तेमाल किया गया है। उसके बाद मिट्टी की सतह है। छह आसारों तक पत्थर है। पत्थर 75 c.m की निचाई तक गडे हुए है। स्तूप के केन्द्र में तीन तीलियां उत्तर, पश्चिम दिशा में बनी है। देखने में यह स्तूप कुषाण कालीन संघोल (जिला फतेहाबाद, पंजाब) के स्तूप से मिलता है। आकार में बेलनकार इस स्तूप के तीन वृत्तीय घेरे है। जिनकी रचना ईंटों से की गई है। इनके बीच वाले भाग में नियमित अन्तराल पर कीलियां बनाई गई है।

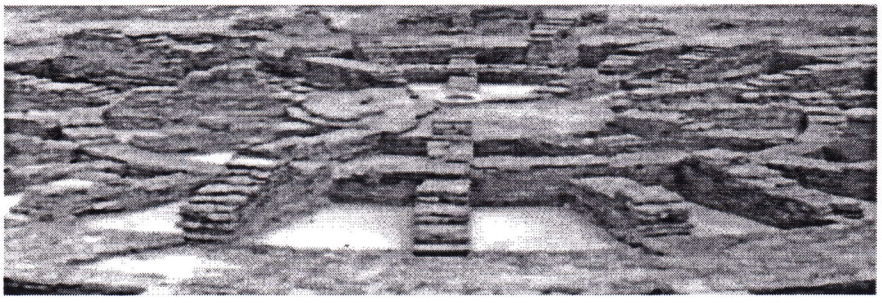

थानेश्वर (कुरूक्षेत्र)

सरस्वती नदी के किनारे हर्ष के टीले के उत्तर–पश्चिम में एक किलोमीटर की दूरी पर एक स्तूप तथा एक बौद्ध विहार पाया गया है। यह स्तूप जमीन से 6 फुट उॅचा था। इसके नजदीक एक 6 वर्ग मीटर लम्बा चौड़ा एक टैंक था जो कि 33x2x37 से0 मी0 के नाप की

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

पकाई हुई ईंटों से बना हुआ था। इन ईंटों की पैमाइश कुषाण कालीन ईंटों का नमुना है। इसके पास ही बौद्ध विहार के निशान भी पाये गये थे। यह कहना अब मुश्किल है कि चीनी यात्री ने जिस स्तूप और विहार का जिक्र किया है वे ये ही हैं या नहीं। उनके अवशेष भी अब यहॉ मौजूद नहीं है।

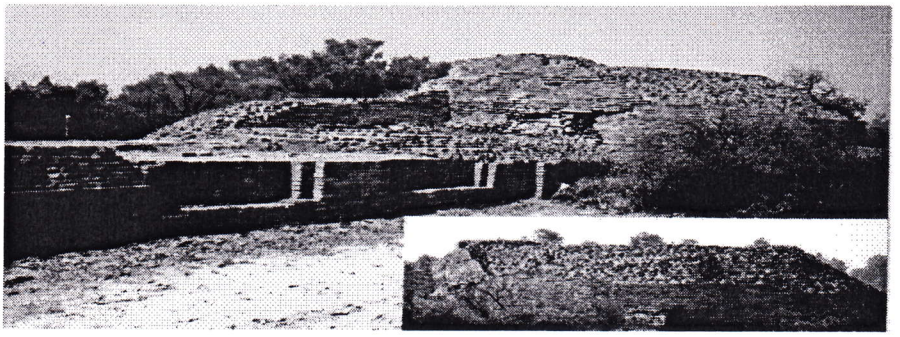

एक दूसरा बौद्ध विहार जो हयूनसांग ने यहां पर पाया था वह कुरूक्षेत्र – कैथल रेलवे लाईन व प्रसिद्ध सहित टैकं के बीच था। यहां से एक टैराकोटा में बना अस्थि कलश भी मिला था। जिसे 1972 में तोड़ दिया गया था। उस स्थान पर अब नई इमारत बन गई है।

कुरूक्षेत्र में ब्रहासरोवर के पश्चिम तट पर ललित कला विभाग के सामने उत्तर दिशा में एक स्तूप नुमा आकृति मिली है। जिसके चारों और भ्क्षिुओं के रहने के लिए विहारों जैसी संरचना भी मिली है। जो छोटी–छोटी लाल रगं की ईटों से बनी हुई है। जिसमें साबुत ईंटों तथा ईंटों के टुकड़ों का प्रयोग किया गया है। स्तूपनुमा आकृति काफी क्षतिग्रस्त है जिस कारण हमें इसके अन्दर की स्थिति का पता चलता है कि यह अन्दर से भी पूरी तरह विधि अनुसार ईटों से भरी हुई है। यह दक्षिण दिशा में बाहर की तरफ निकली हुई है तथा दिवारें कोने लिए हुए है।

<u>असंध</u> :–

असंध में कुषाण कालीन स्तूप के अवशेष मिले है। इसमें से धूसर वर्ण मृदभांड, पूर्व ऐतिहासिक चीनी के बर्तन तथा कुषाण कालीन सिक्के ईंटें योक्षकों के सिक्के तथा मध्यकालीन

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

अवशेष मिलते है।

बौद्ध स्तूप के अवशेषों को स्थानीय लोग जरासन्द का किला कहते है। यह स्तूप कभी बहुत उचा रहा होगा क्योकि आज भी इसकी उचॉई 25 मीटर है। इसका अन्तराल भाग मिट्टी तथा टूटी हुई ईटों से भरा हुआ है गोल टीले का उपर का भाग लम्बा है। इसके एक भाग में गोल दीवार के चवालीस ईंटें के रद्दे दिखते है। यह स्तूप सारनाथ के धमेक स्तूप की तरह दिखता है। इसमें 13.5 -14x8 5.9 x2-2.5 ईटों की पैमाईश की ईटों का इस्तेमाल किया गया है।

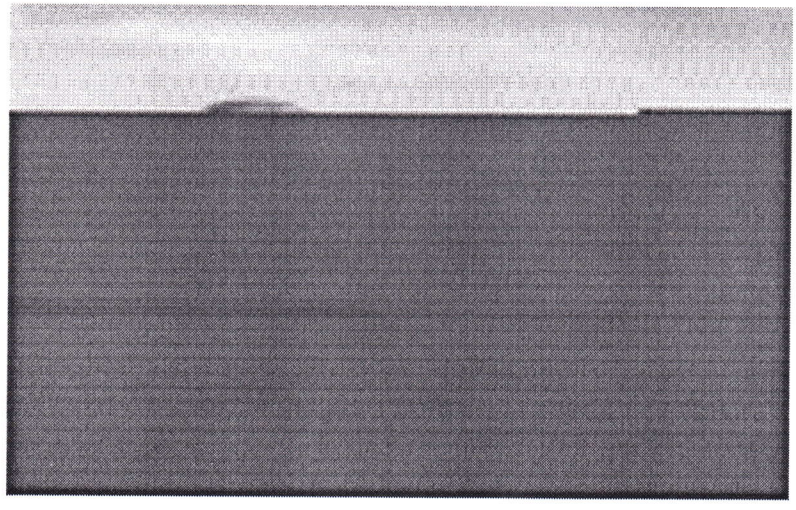

इन बौद्ध स्तूपो के अलावा अमादलपुर (जिला यमुनानगर) से प्राचीन समारक स्तूप प्राप्त हुआ है। जिनकी मोटाई कम तथा उचॉई ज्यादा होती थी। रोहतक के लालपुर में कलात्मक शिलाखण्ड के पदक में अर्ध चन्द्राकार कमल की पृष्ठभूमि में एक स्तूप है। यह स्तूप थोडा लम्बा है।

सुध गॉव (यमुनानगर) के दक्षिण – पश्चिम में आयताकार कुषाण कालीन बुद्ध विहार पाया गया है। जिसकी लम्बाई 130 मीटर है तथा चौड़ाई 70 मीटर है यह लम्बाई पूर्व – पश्चिम की तरफ है। इसकी भव्य दीवारें खुदाई के समय 6 मीटर उची थी। यह बौद्ध मौर्य कालीन है।

मुल सर्वास्तिवादिन विनय तथा दिव्यावदन के अनुसार बुद्ध स्वय सुध गॉव (यमुनानगर –जगाधरी) आये थे। यहॉ पर बुद्ध ने इन्द्र नामक ब्रहण को अपने ज्ञान से प्रभावित किया था। इन्द्र अपने आप को अधिक सुन्दर व ज्ञानी समझता था। बुद्ध के ज्ञान से प्रभावित होकर उनका शिष्य बना।

यहां के स्तूपों का अध्ययन करने का अभिप्राय तथा इसका निष्कर्ष यह निकलता है। कि यहा के स्तूप ज्यादा कलात्मक तो नहीं है जैसे कि सांची स्तूप है। लेकिन यहां के स्तूपो के

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.

Artistic Narration : A Peer Reviewed Journal of Visual & Performing Art ISSN (P) : 0976-7444
Vol. VI 2015 (e) : 2395-7247

आकारों ठोस तथा नग्न ईंटों सहित साधारण और आकर्षक है इन स्तूपों के आकारों में मूर्तियां नहीं मिलती लेकिन कहीं–कहीं स्तूपों के घेरों में कुछ खाली जगह मिलती है। जिनसे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यहां खाली जगहों में यक्ष– यक्षिणी की मूर्ति हो सकती है। स्तूपों की परिक्रमा तथा उपर शिखर तक जाने के लिए पत्थर निर्मित सिढियो में ईंटों के कलात्मक आकारों के अलंकरण है। अतीत में हरियाणा में बौद्ध धर्म का खूब प्रचलन रहा यह बात इसलिए सही लगती है कि हरियाणा के अनेक भागो से बुद्ध की प्रस्तर प्रतिमाए मिली है कुछ प्रतिमाए रोहतक के बाबा मस्तनाथ सग्रांहलय में रखी हुई है। जिन पर गंधार शैली का प्रभाव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 यादव, के0 सी0 य हरियाणा : इतिहास एवं संस्कृति

2 कालसीवाल, मीनाक्षी य भारतीय मूर्ति/शिल्प एवं स्थापत्य कला भारती

3 भान, डॉ0 सूरज य जनरल ऑफ हरियाणा सट्डीज

4 प्रताप, डॉ0 रीता य भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास

5 साखलकर, र0वि0 य आधुनिक चित्रकला का इतिहास

6 कासलीवाल, मीनाक्षी (भारतीय) भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थापत्य कला

7 जौहारी, डॉ0 ऋतु य भारतीय कला समीक्षा (विचार व रूप)

8 हाडा, देवेन्द्र य हरियाणा से बौद्ध अवशेष

9 सिंह, डॉ0 लाल य बुद्ध भूमि हरियाणा

10 क्षेत्रिय, डॉ0 शुकदेव य भारतीय कला– गौरव

11 सिंह, डॉ0 लाल य गौतम बुद्ध का धर्म और दर्शन

12 भारतीय सॉची का कलात्मक अध्ययन

© 2015 Journal Anu Books. Authors are responsible for any plagiarism issues.